[This question paper contains 6 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **1070** **H**

Unique Paper Code : 205502

Name of the Course : **B.A.(Honours) Hindi**

Name of the Paper : आधुनिक कविता–2 : प्रश्नपत्र–XV

Semester : V

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 75***

छात्रों के लिए निर्देश :

(1) इस प्रश्न–पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(2) **सभी** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 7,8

(क) कितनी दूरियों से कितनी बार
कितनी डगमग नावों में बैठ कर
मैं तुम्हारी ओर आया हूं
ओ मेरी छोटी सी ज्योति !

कभी कुहासे में तुम्हें न देखता भी
पर कुहासे की ही छोटी-सी रूपहली झलमल में
पहचानता हुआ तुम्हारा ही प्रभा-मंडल।

अथवा

मैं था अब तक शैव
शक्ति का पूजक था मैं परंपरा से
किंतु कलिंग-विजय के तांडव-लास-त्रास ने
मुझे समूचा हिला दिया है
हल करने का साधन हो सकती है
शक्ति समस्याओं के
मेरा यह विश्वास
धूल में उस विनाश ने मिला दिया है।

अथवा

गोर्की मखीम !
श्रमशील जागरूक जग के पक्षधर असीम !
घुल चुकी है तुम्हारी आशीष
एशियाई माहौल में
दहक उठा है तभी तो इस तरह वियतनाम !
अग्रज, तुम्हारी सौवीं बरसगाँठ पर
करता है भारतीय जनकवि तुमको प्रणाम!
गोर्की मखीम!!

विपक्षों के लेखे कुलिख-कठोर, भीम!!
श्रमशील जागरूक जग के पक्षधर असीम!!
गोर्की मखीम!!

(ख) देश है हम
महज राजधानी नहीं।
हम नगर थे कभी
खंडहर हो गये,
जनपदों में बिखर
गांव घर हो गये,
हम जमीं पर लिखे
आसमां के तले
एक इतिहास जीवित
कहानी नहीं।

अथवा

कहाँ तो तय था चिरागाँ हरेक घर के लिए
कहाँ चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए।

यहाँ दरख्तों के साये में धूप लगती है,
चलो यहाँ से चलें और उम्र-भर के लिए।

अथवा

अरे अब ऐसी कविता लिखो
कि उसमें छंद घूमकर आये
घुमड़ता जाये देह में दर्द
कहीं पर एक बार ठहराये
कि जिसमें एक प्रतिज्ञा करूँ
वही दो बार शब्द बन जाये
बताऊँ बार-बार वह अर्थ
न भाषा अपने को दोहराये

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 15×3=45

(क) पाठ्यक्रम में निर्धारित अज्ञेय की कविताओं के कला पक्ष पर उदाहरण सहित विचार कीजिए।

अथवा

नागार्जुन की कविता 'बहुत दिनों के बाद' में संवेदना पक्ष सोदाहरण उद्घाटित कीजिए।

(ख) नवगीत परंपरा में वीरेंद्र मिश्र का योगदान स्पष्ट कीजिए।

अथवा

हिन्दी ग़ज़ल परंपरा में दुष्यंत कुमार का स्थान निर्धारित कीजिए।

(ग) मोचीराम कविता में भाषा और शिल्प सम्बन्धी नवीनताएँ उद्घाटित कीजिए।

अथवा

'हिन्दी' कविता के आधार पर रघुवीर सहाय की भाषा पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 7+8=15

(क) अज्ञेय द्वारा प्रयुक्त 'कलगी बाजरे की' कविता में नवीन उपमानों का वर्णन कीजिए।

अथवा

नागार्जुन की कविताओं के शिल्प पक्ष पर प्रकाश डालिए।

अथवा

भवानी प्रसाद मिश्र की 'कालजयी' कविता के आधार पर काव्य-भाषा पर विचार कीजिए।

(ख) 'मालिनी वसंती' गीत के माध्यम से वीरेन्द्र मिश्र की भाषा पर विचार कीजिए।

अथवा

रघुवीर सहाय की कविताओं में भाषा शिल्प के धरातल पर नए प्रयोग हुए हैं - स्पष्ट कीजिए।

P.T.O.

अथवा

केदारनाथ सिंह की कविता 'सड़क पर दिख गए कवि त्रिलोचन' का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

300